A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 02, April 2026 (Special Issue)

This paper was presented at the 'Swar Sanskar National Seminar', organized by Swar Sanskar Sangeet Gurukul
Seminar Convener: Dr. Yash Sanjay Dewale (Co-Founder: Swar Sanskar Sangeet Gurukul, Assistant Professor: MSU Baroda)

गायकी के विभिन्न घरानों की विशिष्टताओं का तुलनात्मक अध्ययन

Alka Singh
Research Scholar, Muisc Vocal, Department of Music and Performing Arts, University of Allahabad, Prayagraj, Uttar Pradesh

Read the Article Online

Published on 30 April, 2026

OPEN ACCESS CC BY

सार

संगीत के क्षेत्र में घरानों का सम्प्रदाय अत्यन्त ही विस्तृत रहा है। घरानें का इतिहास जितना पुराना है, उतना ही इसमें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी का आदान-प्रदान भी है, अधिकांश घराने शहरों के नाम से जाने जाते है। ख्याल गायन के मुख्यत: पाँच घराने हैं- ग्वालियर घराना, आगरा घराना, जयपुर घराना, दिल्ली घराना, किराना घराना आदि।

वर्तमान समय में ख्याल गायन शैली के यही घरानें अपनी एक अलग पहचान बनाते है जिससे वह पहचाने जाते है। यह एक ऐसी परम्परा है, जो गुरू और शिष्य के परस्पर सम्बन्ध को भी दर्शाता है। हर घरानें की अनेक विशेषताए है, जिसके चलते घरानों का नाम उनकी गायकी पर पढ़ा। इन घरानों की विशेषताओं की तुलना करना मेरे लिए अत्यन्त ही अनोखा प्रयोग रहा है। जब मैंने इन घरानों का विस्तार से अध्ययन किया, जिसमें मैंने पाया कि हर घराने की अपनी एक विशेषता है, जो उसे अन्य घराने से अलग करती है। ग्वालियर घराने की बात की जाये तो उसमें खुली आवाज़ में गायन, अष्टांग गायकी, तीनों सप्तकों का प्रयोग, आगरा घराने में नोमतोम का आलाप, लयकारी, लय एवं ताल पर प्रभुत्व, जयपुर में बलपेंचयुक्त तानों का प्रयोग, दिल्ली घराने में तानों की जटिलता, स्वरों का आपस में गुंथाव और जोड़तोड़ का काम, मध्य लय में अधिक देखने को मिलता है, किराना घराने में चैनदारी गायकी और सुर पर प्रभुत्व होता है क्योंकि यह बीनकार का भी घराना है।

गायकी के विभिन्न घरानों की विशिष्टताओं का तुलनात्मक अध्ययन करते समय मैंने अपने शोध पत्र में कुछ अन्य महत्वपूर्ण बातों पर भी चर्चा की है और अन्त में यही पाया कि संगीत में कितने ही नये बदलाव आते जाए लेकिन घराने की परम्परागत मूल गायकी का वर्चस्व हमेशा बना रहेगा।

मुख्य शब्द - संगीत, गायकी, घराना, ख्याल, विशेषताए, कलाकार।

भारतीय संगीत में प्रत्येक घराने की अलग-अलग विशेषताओं के चलते घरानों का उद्भव एवं विकास हुआ है। ख्याल गायकी की विशिष्ट ढंग से प्रस्तुति ही घराना कहलाता है। घराना शब्द की व्युत्पति संस्कृत के गृह शब्द में मानी गई है। घराना शब्द का अर्थ किसी वर्ग से, परिवार से, सम्प्रदाय, कुटुम्ब, परम्परा, वंश आदि को दर्शाता है। घराना एक परम्परागत शैली भी है, जो एक से दूसरे कलाकार को हस्तान्तरित होती है। यह गुरू और शिष्य के परस्पर सम्बंध को भी दर्शाती है जो प्रत्येक घराने की मूल गायकी होती है, जिससे विभिन्न कलाकारों के माध्यम से सीखाकर परम्पराओं का जीवन्त स्वरूप हमें देखने को मिलता है।

विभिन्न कलाकारों द्वारा भी घराने को समझा जा सकता है -

"पं. बबनराव हलदनकर कहते है- "Gharana does not merely mean a family tree, but a Gayaki which has a discipline, rules and aesthetic approach in presenting a Raga in a particular manner"

"प्रो. विजय किचलू जी कहते है- "Gharana is a system of imparting training and then an artist adds his creativity to it"

दोनों ही कलाकारों ने घराने की अलग अलग परिभाषा दी है 'हलदनकर जी' और 'किचलू' द्वारा बताया गया है कि यह कला एक पारिवारिक पृष्ठभूमि से भी सम्बंधित है। जिसमें गुरू द्वारा सिखायी गई गायकी शिष्य द्वारा सीखी गयी गायकी में अपने प्रयोग को प्रस्तुत करता है।

ग्वालियर घराना

संगीत के क्षेत्र में ख्याल गायन के छह घराने माने जाते है, जिसमें ग्वालियर घराना ख्याल गायकी का अति प्राचीन घराना है। ग्वालियर घराने में ख्याल गायकी की परम्परा नत्थन पीरबख्श से मानी जाती है, परन्तु कुछ विद्वानों का कहना है कि इस घराने की परम्परा लखनऊ से निकली है। लखनऊ के गुलाम रसूल ही इस परम्परा के मूल पुरूष माने जाते है। आपने अपने भांजो शक्कर खां ओर मक्खन खां को ग्वालियर की तालीम दी। मक्खन खां के पुत्र नत्थन पीरबख्श हुए। बालकृष्ण बुवा इंचलकरंजीकर ग्वालियर घराने के पितामाह कहलाये। इनके शिष्य विष्णु दिगम्बर पलुस्कर हुए जिनके अनेक शिष्य हुए जिनमें पं. विनायक राव पटवर्धन, नारायण राव व्यास, पं. ओमकार नाथ ठाकुर, अनंत मनोहर जोशी, गजानन जोशी, डी.वी. पलुस्कर हुए। इस प्रकार इस घराने के कलाकारों ने अपने शिष्यों को ग्वालियर घराने की अष्टांग गायकी की भी तालीम दी।

ग्वालियर घराने की परम्परागत गायकी में खुली बुलंद आवाज़ और जोरदार स्वर लगाना, सीधी सपाट तानें, सरल एवं ढ़ीली तान, गमक युक्त तान, फिरत तान, रागांग तान, मुर्कियों की तान, जबडें की तान, अष्टांग गायकी, तीनों सप्तक में प्रयोग, साधारण विलम्बित लय में गायन, मींडयुक्त गायन, खरज साधना, आदि पर विशेष बल दिया जाता है।

ग्वालियर घराने के मूर्धन्य गायक 'पं. कृष्णराव पंडित' ने कहा है - "ग्वालियर ख्याल गायकी, खुले गले की गायकी हे। इसमें गले को कृत्रिमता से नहीं लगाया जाता जिसके कारण गला अपने स्वाभाविक तरीके से ही तैयार होता है। यहां की गायकी मर्दानी तथा जोरकश होने से बुलंद आवाज की जरूरत होती है।"

ग्वालियर घराने में मुख्य रूप से राग हमीर, शंकरा, कामोद, यमन, मियांमल्हार, बसंत, मुल्तानी, भैरव, गौडमल्हार आदि को गाया जाता है, जिससे गायक को अपने गायन में राग का विसतार करने में और अपनी नवीन अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने के लिए सहज अनुभव होता है।

आगरा घराना

ख्याल गायकी का दूसरा घराना 'आगरा घराना' है। आगरा घराने के प्रवर्तक अकबर युग के हांजी सुजान खां माने जाते है। आपके चार पुत्र मलखदास, लवंगदास, खलकदास, अलखदास हुए। मलखदास के दो पुत्र सरसरंग और श्यामरंग हुए, जो नौहार वानी में ध्रुपद गाया करते थे। श्यामरंग के छोटे पुत्र घग्गे खुदाबख्श थे। आगरा घराने की ख्याल गायकी का सम्पूर्ण स्वरूप आपके द्वारा देखने को मिलता है घग्गे खुदाबख्श आवाज़ में घरघराहट होने के कारण आपके परिवार में किसी ने इनको तालीम नहीं दी, जिसके चलते वह ग्वालियर गये और नत्थन पीरवख्श से ग्वालियर की सम्पूर्ण तालीम, लेकर जब वे आगरा वापस पहुंचे तो उनकी आवाज़ का दोष समाप्त हो चुका था। घग्गे ने वर्षो तक ग्वालियर की ख्याल गायकी को आत्मसात किया और आगरा आकर जब उन्होंने महफिलों में गाया तो उनकी आवाज सुनकर सब आश्चर्यचकित रह गये और कहने लगे ये वही घग्गे है जिसकी आवाज़ में घरघराहट थी।

आगरा घराना मुख्यता ध्रुपद-धमार से प्रभावित घराना माना जाता है परन्तु घग्गे खुदाबख्श द्वारा ग्वालियर घराने से इस घराने में ख्याल गायन का भी प्रचार प्रसार होने लगा। उस्ताद् विलायत हुसैन खां और उस्ताद् फैयाज़ खां साहब इस घराने के मूर्धन्य कलाकार थे। जिनसे आज भी आगरा घराना पहचाना जाता है। कहा जाता था कि फैयाज़ खां माने आगरा घराना और आगरा घराना माने फैयाज़ खां।

आगरा घराने की मुख्य विशेषता नोम्-तोम् का आलाप, लय एवं ताल पर प्रभुत्व, स्वरोच्चार व शब्दोचार पर विशेष महत्व, आवाज का लगाव, षडज भरना, खेंच, कहन, बोल आलाप, स्थायी अंग से गाना आदि इसकी विशेषता रही है।

दिल्ली घराना

ख्याल गायकी के घरानों की परम्परा में दिल्ली घराने की भी अपनी एक अलग पहचान है। दिल्ली के मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले के शासन काल से ही इसकी गायकी का पुनर्जन्म हुआ। उस्ताद् नियामत खां (सदारंग) तथा फिरोज खां (अदारंग) भी इसी घराने से सम्बंधित माने जाते है। इस घराने के मूल पुरूष गुलाम हुसैन (मियां अचपल) माने जाते है जोकि अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफ़र के गुरू थे। मियां अचपल के शिष्य तानरस खां को ही इस घराने का सर्वश्रेष्ठ कलाकार माना जाता है। तानरस खां के पुत्र उमराव खां ने इस परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य किया। दिल्ली घराने ने केवल गायन में ही नहीं बल्कि वादन के क्षेत्र में भी अत्यधिक लोकप्रियता पायी है। वर्तमान में मम्मन खां के पुत्र चांद खां को दिल्ली घराने का प्रचारक माना जाता है। और आजकल आपके दत्तक पुत्र इकबाल अहमद और भतीजे नसीर अहमद इस घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे है।

दिल्ली घराने की गायकी में स्वर का लगाव, सीधी आवाज़ में गायन, तानों, मींड, सूत और जोड़-तोड़ की तानें, झूले की तानें, खेंच की तानें, गायन में स्वरों का मेल, लय की विविधता, अत्यधिक देखने को मिलती है। दिल्ली घराने में विलम्बित ख्यालों के लिए तिलवाड़ा, झूमरा, सवारी ताल का प्रयोग किया जाता है। वादन का घराना होने से इस घराने में चाटी का प्रयोग तबला वादक अत्यधिक प्रयोग करते हैं जो इसकी मुख्य विशेषता है। ख्याल के अतिरिक्त दिल्ली घराने में ठुमरी, ध्रुपद, धमार, गज़ल व कव्वाली भी महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए है। ठुमरी की रचना के लिए 'सनद पिया' और कव्बाली के लिए अब्दुल्ला खां, मुल्लन खां का नाम आज भी लोग याद करते है।

जयपुर घराना

जयपुर घराना ख्याल शैली का अत्यधिक पुराना घराना है। जयपुर घराने के उस्ताद् मुहम्मद अली खां जिन्होंने अनेकों बंदिशों की रचना रची। इनका जन्म जयपुर में हुआ जिसके चलते इनकी गायकी भी जयपुर के नाम से जानी जाने लगी। आपके पुत्र आशिक अली खां को भी आपने जयपुर गायकी सिखायी और वे इस घराने के प्रतिष्ठित कलाकार बन गये। घराने को आगे चलकर उस्ताद् अल्लादियां खां जैसे प्रतिष्ठित कलाकार, प्रतिभा सम्पन्न कलाकार, नई गायन शैली के प्रवर्तक के रूप में माने जाने लगे। जयपुर के ही दरबारी गायक, मुबारक अली खां के गायन से प्रभावित होकर जयपुर घराने का महत्व बढ़ने लगा। वर्तमान में इस घराने को अतरौली या अल्लादिया घराने के नाम से जाना जाने लगा। स्व. अल्लादियां खां मूलत: अतरौली निवासी थे इसी कारण इनकी गायकी को 'अतरौली घराना' भी कहा जाने लगा।

जयपुर घराने की गायकी में ध्रुपद- धमार अत्यधिक देखने का मिलता है फिर भी ख्याल शैली का प्रारम्भ उस्ताद् अल्लादियां खां से ही माना जाता है। इस घराने की अनेक विशिष्टताए रही है जैसे- गायकी में ध्रुपद की गहराई, स्वर व लय का जोड़, बोलबांट, विलम्बित लय में गायन, आलापचारी, छोटी-छोटी तानों का प्रयोग, मध्य लय में पेंचदार, दानेदार तथा गमकयुक्त ताने, टप्पा अंग का प्रयोग, गमक का प्रयोग आदि। इस घराने की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि तंत्र अंग की गायकी अर्थात् गले पर नियन्त्रण तथा एक स्वर से दूसरे स्वर तक जाने की प्रक्रिया को मधुरता से प्रस्तुत करना इस घराने की खासियत है।

किराना घराना

किराना घराना ख्याल गायकी का अत्यधिक लोकप्रिय घराना रहा है। इसे बीनकार का घराना भी कहा जाता है। किराना घराने को प्रारम्भ करने का श्रेय ध्रुपद गायक उस्ताद् बंदे अली को माना जाता है परन्तु यदि घराने की बात की जाए तो इस घराने को उस्ताद् अब्दल करीम खां और उस्ताद् अब्दुल वहीद खां ने प्रसिद्धि दिलायी। उस्ताद् अब्दुल करीम खां ने ही इस घराने की परम्परा को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने का कार्य किया है। किराना घराने को आपने जो प्रसिद्धि दिलायी और अनेक संगीतज्ञों को भी तैयार किया जो वर्तमान में इस घराने को सम्पूर्ण जगत में एक अलग पहचान दिलाये हुए है।

किराना घराने की गायकी की अलग ही पहचान रही है। यह घराना स्वरों के सुरीलेपन और चैनदारी के लिए विख्यात रहा है। यह बीनकारों का घराना है इसलिए इसकी गायकी में अनोखापन हमें देखने को मिलता है जैसे- शुद्ध स्पष्ट स्वर शैली, मुलायम स्वराघात का विशेष तरीका, गायकी में स्वरों का लगाव, लोच और मींड का काम और धीमी बढ़त किराना घराने की विशेषता रही है। इस घराने के संगीतकारों ने अपने गायन में आलाप प्रधान गायकी और ठुमरी अंग को भी शामिल किया। राग तोड़ी, दरबारी, पूरिया, मालकौंस इस घराने के सिद्ध रागों में से एक है।

घरानों की विशिष्टताओं का तुलनात्मक अध्यन

भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न घरानों का अध्ययन करके प्राप्त हुआ कि हर घराना किसी न किसी रूप में अलग है। जिस प्रकार हर व्यक्ति की अपनी अलग पहचान होती है जिससे वह सबसे अलग दिखता है वैसे ही हर घराने की अपनी विशेषता है। हर घराने के अपने कड़े नियम होते है। पं. अजय पोहनकर जी कहते हैं "प्रत्येक घराने अथवा गायकी का अपना महत्व है, मिजाज है, रंग है व खुशबू है।"

किसी भी घराने की गायकी को आत्मसात करने के लिए स्वर का अभ्यास, तानों का अभ्यास, लय का अभ्यास अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि हम हर घराने की विशिष्टताओं से तुलना करे तो हम पाते है कि हर घरानों के गायन का तरीका अलग-अलग है परन्तु ग्वालियर घराना ही हर घराने का मूल घराना है क्योंकि हर घराना यही से उत्पन्न माना जाता है।

ग्वालियर घराने में खुली व दमदार आवाज़ में गायन होता है वही आगरा घराना ध्रुपद धमार गायकी का घराना होने से इसमें नोम्-तोम् का आलाप होता है, किराना घराना में आलाप प्रधान गायकी है, जयपुर में विलम्बित लय में छोटी-छोटी तानें व ध्रुपद अंग में गमक और टप्पा अंग का प्रयोग होता है। दिल्ली में विलम्बित लय में मींड सूत, गमक का प्रयोग किया जाता है।

ग्वालियर घराने की गायकी अष्टांग अंग की गायकी है वही आगरा घराने में अट्ठारह अंग की गायकी का प्रयोग किया जाता है। किराना घराना में ताल से जुदा गायकी लगती है। जयपुर में आवाज़ का लगाव बहुत ही सहजता से लगाया जाता है। दिल्ली में सारंगी वादन होने से ताल पर विशेष महत्व दिया जाता है।

ग्वालियर घराने में राग में बहलावा, सपाट तानों का प्रयोग किया जाता है, वही आगरा घराना लय का घराना है इसमें ताल पर भी प्रभुत्व रहता है, किराना घराने में बोल उपज अथवा लयकारी का अत्यधिक प्रयोग होता है, जयपुर में पेंचदार, दानेदार, गमकयुक्त तथा लय व ताल छोटी-छोटी तानों का प्रयोग होता है दिल्ली में पेंचदार, फंदे, उड़ान, खेंच व सपाट तानों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।

ग्वालियर घराने में प्रचलित रागों को गाने का विशेष महत्व है। आगरा घराने में बंदिशदार चीजों का अत्यधिक प्रयोग होता है। किराना घराने में ठुमरी गायन का प्रयोग होता है वही जयपुर में वक्र व अप्रचलित रागों के गायन की परम्परा रही है।

साहित्य की समीक्षा

शोध पत्र के लिए विभिन्न पुस्तकों जैसे- विविध घरानों की समन्वित गायकी, आगरा घराना, ग्वालियर की संगीत परम्परा, मिलनोत्सुक दो तानपुरे, संगीत के घराने आदि पुस्तकों का अध्ययन किया जिसमें शोध पत्र के लिए विभिन्न घरानों के विषय में विस्तृत जानकारी और विशेषताएं प्राप्त हुई। इन पुस्तकों का प्रयोग करके अन्य घरानों से तुलना की और शोध पत्र को एक नवीन आकार प्राप्त हुआ, जो इन पुस्तकों से ही सम्भव हो सका है।

अनुसंधान पद्धति

इस शोध पत्र में प्राथमिक स्त्रोत में पुस्तकों के माध्यम से सहायता प्राप्त की है। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक, वर्णात्मक और तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

शोध पत्र लेखन का निष्कर्ष यही निकलता है कि हर घराने की अपनी एक मूल धरोहर है, जिसका प्रयोग करके हर घराना अपनी अलग जगह बनाता है, जो इस शोध पत्र द्वारा दर्शाया गया है। संगीत गायन के यह पांच घराने है जिनका परिचय, विशेषताओं और तुलनात्मक अध्ययन का समावेश इस शोध पत्र में निहित है। प्रत्येक घराने की गायन शैली और गाने का ढंग, आवाज़ लगाने का तरीका, आलापचारी, कहन, स्वरोच्चार व शब्दोच्चार, खुली एवं जोरदार आवाज़ में गायन, सरगम, सुर पर प्रभुत्व लय एवं ताल पर प्रभुत्व, तान प्रस्तार विलम्बित लय मे गायन का अपना एक अलग तरीका है जिससे वह अन्य घरानों से अलग होते है। मेरे इस शोध पत्र में विभिन्न घरानों से चर्चा व उनकी विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना था, जिससे नवीन पीढ़ी के लिए यह शोध पत्र लाभान्वित हो सके और सभी घरानों से परिचित हो सके।

सन्दर्भ सूची

शर्मा, प्रतिभा - विविध घरानों की समन्वित गायकी, पृष्ठ संख्या - 14-15
शर्मा, प्रतिभा - विविध घरानों की समन्वित गायकी, पृष्ठ संख्या - 15
हलदणकर, श्रीकृष्ण अनुवादक डॉ. हिमांशु विश्वरूप, डॉ. वीणा विश्वरूप - मिलनोत्सुक दो तानपुरे जयपुर एवं आगरा गायकी के सौन्दर्यतत्व
विश्वरूप, वीणा - आगरा घराना (राग गायन के क्षेत्र में आगरा घराने की समग्र विशेषताओं का पर्यालोचन) अखिल भारतीय संगोष्ठी 2022-2023 फरवरी गायन विभाग, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्‌ध्याल, खैरागढ़
बांगरे, अरूण - ग्वालियर की संगीत परम्परा
मारूलकर, ना.र. - संगीत के घराने